UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 17 बादल चले गए वे (मंजरी)

बना बना कर ..... चले गए वे।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'मंजरी' के 'बादल चले गए वे' नामक कविता से ली गई हैं। इसके रचयिता त्रिलोचन जी हैं।

प्रसंग – प्रस्तुत कविता में बादल के माध्यम से कवि ने सुख और दुख की बात कही है। जैसे बादल आते हैं और चले जाते हैं, वैसे ही सुख भी जीवन में आता और चला जाता है।

व्याख्या – बादलों ने सुन्दर रंग-बिरंगे चित्र-से खाली आकाश को सजा दिया। आकाश में मधुर संगीत हुआ और विभिन्न रंग दिखने लगे। आकाश में हुई शोभा ने चित्त मोह लिया। वे बादल चले गए।

आसमान अब ..... चले गए वे।

संदर्भ और प्रसंग – पूर्ववतु।

व्याख्या – बादलों के चले जाने पर आकाश साफ नीला-नीला स्वच्छ दिखाई दे रहा है। वह दूर-दूर तक रसयुक्त, श्यामल रंग से सजा हुआ था। धरती पीली, हरियालीयुक्त और रसवंती हो रही थी। जाड़े के दिनों में प्रातःकाल ओस के कारण भीगा हुआ, प्रकाशित नजर आ रहा था अर्थातू बादलों के बरसने के कारण ही धरती का सौंदर्य सबको आकर्षित कर पाता है। वे बादल चले गए।

दो दिन दुःखे ..... जैसे रहकर।

संदर्भ और प्रसंग – पूर्ववत् ।

व्याख्या – संसार में दो दिनों के लिए सुख और दो दिनों के लिए दुःख होने का क्रम चलता रहता है। वास्तव में, सुख-दुःख दोनों का आपस में संयोग लगा ही रहता है। संसार में, मनुष्य के जीवन में हँसी और आँसुओं की नई तरंगें (लहरें) आती ही रहती हैं। बादल इस प्रकार आए थे, जैसे दो दिनों के लिए मेहमान आते और चले जाते हैं।

https://www.evidyarthi.in/